



WRITERS CREW INTERNATIONAL RESEARCH

JOURNAL

शिक्षकों की भूमिका और हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ:

जौनसार बावर क्षेत्र का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी वर्मा

प्रोफ़ेसर

शिक्षा संकाय, हिमगिरी ज़ी यूनिवर्सिटी

&

अनिता तोमर

शोध छात्रा

शिक्षा और मानविकी स्कूल

हिमगिरी ज़ी यूनिवर्सिटी

देहरादून



541Online

सारांश:

यह शोध पत्र उत्तराखंड राज्य के जौनसार-बावर क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी विषय के शिक्षण और अधिगम से जुड़ी समस्याओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हिंदी भाषा भारत के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान की महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसे स्वतंत्रता संग्राम से लेकर अब तक महात्मा गांधी, विद्यानिवास मिश्र, और विभिन्न शिक्षा आयोगों ने अपने वक्तव्यों और नीतियों में राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में प्रोत्साहित किया है। हालांकि हिंदी का महत्व लंबे समय से स्थापित है, फिर भी हिंदी शिक्षण में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इन चुनौतियों में क्षेत्रीय स्तर पर संसाधनों की कमी, शिक्षण पद्धतियों की अपर्याप्तता, और छात्र-शिक्षक संवाद में अड़चने शामिल हैं।

शोध में शिक्षा आयोगों, त्रिभाषा सूत्र और राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा हिंदी के संवर्धन हेतु की गई सिफारिशों की समीक्षा की गई है। इसके साथ ही क्षेत्रीय विद्यालयों में शिक्षकों और छात्रों के साथ बातचीत, पाठ्यक्रमों का विश्लेषण, तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से हिंदी के प्रति विद्यार्थियों और अभिभावकों की मानसिकता का अवलोकन किया गया है। यह अध्ययन



541Online

सुझाव देता है कि हिंदी को शिक्षण के अनिवार्य भाग के रूप में सुदृढ़ किया जाए और क्षेत्रीय विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार संसाधनों का उचित प्रबंध हो, ताकि राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में हिंदी की भूमिका सुनिश्चित की जा सके।

इस शोध का उद्देश्य हिंदी शिक्षण को और प्रभावी बनाना, क्षेत्रीय विद्यालयों में हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करना है।

प्रस्तावना

भारत में हिंदी का महत्व वास्तव में किसी औचित्य की आवश्यकता नहीं है। हिंदी को भारत की स्वतंत्रता से पहले ही इस देश के प्रतिष्ठित विचारकों और नेताओं द्वारा राष्ट्रीय भाषा माना जाता था। शोधकर्ता इस संबंध में कुछ उद्धरण प्रस्तुत करना चाहेंगे जो नीचे दिए गए हैं।

”भारत में हिंदी आंदोलन के प्रश्न पर पहली घोषणा गांधीजी ने 1917 में भरूच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में की थी। उन्होंने इस बारे में कहा था कि उन्होंने अंग्रेजी को



541Online

क्यों अस्वीकार किया और हिंदी को अपनाया, क्योंकि उन्हें भारत की विभिन्न स्वभाषाओं या स्वदेशी भाषाओं में से एक होने का अनूठा सम्मान मिला। राष्ट्रीय भाषा की कसौटी क्या है?

1. अधिकारी वर्ग के लिए इसे सीखना आसान होना चाहिए;
2. पूरे भारत में धार्मिक वाणिज्यिक और राजनीतिक गतिविधि उस भाषा में संभव होनी चाहिए;
3. यह भारत के अधिकांश निवासियों की भाषा होनी चाहिए;
4. पूरे देश के लिए इसे सीखना आसान होना चाहिए;
5. प्रश्न पर विचार करते समय, क्षणिक या अल्पकालिक शर्तों पर जोर नहीं दिया जाना चाहिए।

गांधीजी ने तब दिखाया कि अंग्रेजी भाषा इनमें से किसी भी शर्त को पूरा नहीं करती है। उनकी राय में "पांच शर्तों को पूरा करने में हिंदी के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कोई अन्य भाषा सक्षम नहीं है।"

गांधीजी आगे कहते हैं, "मुस्लिम शासकों के अधीन भी हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा थी और वे फारसी या अरबी को राष्ट्रीय भाषा बनाने में असमर्थ थे"। इस प्रकार गांधीजी के अनुसार, हिंदी को अंतरभाषा होना चाहिए - अंतर-प्रांतीय और अखिल भारतीय संचार का माध्यम, हिंदी प्रचार



541Online

आंदोलन के जनक गांधीजी ने जनवरी 1938 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रजत जयंती दीक्षांत समारोह में हिंदी पर टिप्पणी करते हुए निम्नलिखित टिप्पणी की:

”निश्चित रूप से एक गैर-हिंदी भाषी व्यक्ति के लिए हिंदी या हिंदुस्तानी सीखना कोई मुश्किल बात नहीं है। मैं तीन महीने के अंतराल में गुजराती, बंगाली या मराठी जानने वाले किसी भी व्यक्ति को हिंदी सिखाने का बीड़ा उठा सकता हूँ। दक्षिण भारतीय भाषाएँ - तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ - भी संस्कृत शब्दों से भरी हैं और अगर देश के प्रति थोड़ी भी कृपा और प्रेम हो तो हमें संस्कृत से निकली सभी भाषाओं और दक्षिणी समूह को देवनागरी लिपि में लिखने में संकोच नहीं करना चाहिए। इन भागों में हिंदी और उर्दू समझी जाती है और दोनों लिपियाँ जानी-पहचानी हैं। सच तो यह है कि हमने अंग्रेजी पर जो साल बर्बाद किए हैं, उससे हमारा दिमाग खराब हो गया है और हमारी याददाश्त और कल्पनाशक्ति क्षीण हो गई है। हिंदी को गौरवपूर्ण स्थान दें।”

उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी का महत्त्व धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैलेगा। शोधकर्ता विद्यानिवास मिश्र के उपरोक्त कथन से पूरी तरह सहमत हैं और उनका मानना है कि सभी स्तरों



541Online

पर शिक्षा में हिन्दी के स्थान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अगले भाग में शिक्षा में हिन्दी के स्थान पर अधिक प्रकाश डाला जाएगा।

शिक्षा में हिन्दी का स्थान:

भारत सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा आयोगों ने हमेशा माध्यमिक विद्यालय स्तर पर इस देश के विद्यार्थियों द्वारा अनिवार्य रूप से सीखी जाने वाली भाषाओं में से एक के रूप में हिन्दी के स्थान को चिह्नित किया है। इन आयोगों के कुछ सुझाव इस प्रकार हैं: माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने हिन्दी को अनिवार्य बनाने की वकालत इन शब्दों में की: "हिन्दी को स्कूली पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय बनाया जाना चाहिए, अन्यथा जो लोग हिन्दी नहीं पढ़ते हैं, वे बाद में सेवा में प्रवेश करने या भारत के उन हिस्सों में अधिक स्वतंत्र रूप से संवाद करने में असमर्थ हो सकते हैं, जहाँ यह भाषा आमतौर पर इस्तेमाल की जाती है।" शिक्षा में हिन्दी के अनिवार्य विषय के रूप में स्थान पर चर्चा करते हुए राजभाषा आयोग ने निम्नलिखित कथन दिया: 'हम हिन्दी में न्यूनतम तीन से चार वर्ष की शिक्षा प्रदान करना आवश्यक मानते हैं। संघ की भाषा चौदह वर्ष की अनिवार्य



541Online

आयु सीमा के भीतर सभी बच्चों के लिए पूर्ण है।' इसी आयोग ने आगे कहा कि माध्यमिक विद्यालय स्तर पर हिंदी को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।

आयोग ने निम्नांकित उद्धरण दिया है: "हमारे विचार में पूरे देश में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर हिंदी में शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और इस तरह की कार्रवाई के पक्ष में तर्क मजबूत और निर्णायक हैं।" हालांकि, व्यय के कारण भी विशेष क्षेत्रों में प्रासंगिक हो सकते हैं और यह निर्णय कि अनिवार्यता कब लागू की जानी चाहिए, संबंधित राज्य सरकार को लेना चाहिए, जिसके अधिकार क्षेत्र में यह निर्णय आता है।"

कोठारी आयोग की सिफारिशें भी खेर आयोग की सिफारिशों के समानांतर हैं, जब वे इस प्रकार इंगित करते हैं: यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी हमारे अधिकांश लोगों के लिए संपर्क भाषा के रूप में काम नहीं कर सकती है। यह केवल हिंदी ही है जो समय के साथ यह स्थान ले सकती है और लेनी चाहिए क्योंकि यह संघ की आधिकारिक भाषा है और लोगों की संपर्क भाषा है, गैर-हिंदी क्षेत्रों में हिंदी के प्रसार के लिए सभी उपाय अपनाए जाने चाहिए। इस कार्यक्रम की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगी कि इसे उन क्षेत्रों के लोगों द्वारा किस हद तक स्वेच्छा से



541Online

स्वीकार किया जाता है। आयोग आगे स्कूली पाठ्यक्रम में हिंदी के स्थान की सिफारिश करता है: हिंदी संघ की आधिकारिक भाषा है और समय के साथ इसके सामान्य भाषा बनने की उम्मीद है।

देश की भाषाई शिक्षा प्रणाली में इसका महत्व मातृभाषा के बाद दूसरे स्थान पर होगा।” 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी राज्यों को हिंदी के विकास के लिए कदम उठाने का निर्देश देती है, इन शब्दों में: “हिंदी के विकास को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।” हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की समग्र संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बने। गैर-हिंदी राज्यों में हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करने वाले महाविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में विद्यालयों में हिंदी के अध्ययन के बारे में शिक्षा आयोग 1954-66 की सिफारिशों पर भी समान जोर दिया गया है।



541Online

इसमें निम्नलिखित कहा गया है: "1968 की शिक्षा नीति में भाषाओं के विकास के प्रश्न की बहुत विस्तार से जांच की गई थी, इसके आवश्यक प्रावधानों में शायद ही कोई सुधार किया जा सके और वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले थे। हालांकि 1968 की नीति के इस भाग का कार्यान्वयन असमान रहा है। नीति को और अधिक ऊर्जावान और उद्देश्यपूर्ण तरीके से लागू किया जाएगा।" उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के माध्यमिक विद्यालयों के भाषा पाठ्यक्रम में हिंदी का स्थान त्रिभाषा फार्मुले के अंतर्गत दूसरे स्थान पर है।

हिंदी के ज्ञान की आवश्यकता

देश की स्वतंत्रता के पश्चात, संविधान के अनुच्छेद 351 के अंतर्गत केंद्र सरकार ने हिंदी की प्रगति और संवर्धन के लिए अनेक योजनाएं बनाईं। इन योजनाओं के अंतर्गत देश में हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने से हिंदी शिक्षा के कार्य को अपेक्षित गति मिली। जब देवनागरी लिपि वाली हिंदी संघ की राजभाषा बनी तो इसका देश के शिक्षा परिदृश्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। केंद्र सरकार के अधिकारियों को हिंदी शिक्षा प्रदान करना सरकार का कर्तव्य बन गया।



541Online

संसद की राजभाषा समिति (सीपीओएल) ने राष्ट्रपति को सौंपी गई रिपोर्ट के विभिन्न अध्यायों में देश में शिक्षा में हिंदी को बढ़ावा देने के संबंध में अपनी सिफारिशें दी हैं। समिति द्वारा फरवरी 1989 में राष्ट्रपति को प्रस्तुत रिपोर्ट के तीसरे भाग में समिति ने शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी शिक्षा की आवश्यकता, इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेजों की प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प, त्रिभाषा फार्मूला लागू करना, केन्द्र सरकार के अधिकारियों को हिन्दी पढ़ाना, पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी पढ़ाना, दूरदर्शन/आकाशवाणी द्वारा हिन्दी पाठों का प्रसारण आदि की संस्तुतियां की थीं। इन संस्तुतियों पर राष्ट्रपति के आदेश भी जारी हो चुके हैं। इसी प्रकार समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के पांचवें भाग में हिन्दी माध्यम से विधि की पढ़ाई के संबंध में महत्वपूर्ण संस्तुतियां की गई थीं। इस संस्तुति के अनुसार देश के सभी विश्वविद्यालयों तथा अन्य विधि संस्थानों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी माध्यम से विधि की पढ़ाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। शिक्षा विभाग को इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने को कहा गया था।



541Online

समिति की रिपोर्ट के तीसरे भाग की संस्तुति के अनुसार राजभाषा विभाग ने मई 1992 में आवश्यक निर्देश जारी करते हुए कहा था कि सभी प्रकार के प्रशिक्षण, चाहे वे अल्पावधि के हों या दीर्घावधि के, हिन्दी माध्यम से दिए जाने चाहिए ताकि हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कर्मचारी अपना मूल सरकारी काम आसानी से हिन्दी में कर सकें।

इन प्रयासों के बावजूद समिति ने अपने निरीक्षणों के दौरान यह महसूस किया कि जब तक कर्मचारी सेवा में आने से पहले हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक वे अपने नियमित सरकारी काम में हिन्दी का प्रयोग नहीं कर पाएंगे। इसलिए समिति का मानना है कि यह तभी संभव हो सकता है जब प्राथमिक शिक्षा में हिंदी को अनिवार्य कर दिया जाए।

वर्तमान में, केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित केंद्रीय विद्यालयों और राज्य सरकार के विद्यालयों में आठवीं कक्षा तक ही हिंदी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। केंद्र सरकार के अधिकारियों का समय-समय पर तबादला होता रहता है और उन्हें देश में अलग-अलग स्थानों पर तैनात किया जाता है। सभी केंद्रीय विद्यालयों में हिंदी की अनिवार्य शिक्षा के संबंध में एक स्पष्ट और प्रभावी नीति होनी चाहिए, जो विशेष रूप से केंद्र सरकार के कर्मचारियों के बच्चों को



541Online

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए स्थापित की गई है। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय को इस संबंध में कुछ पहल करनी चाहिए। यह इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि माननीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्री ने हाल ही में कहा है कि भविष्य में देश के हर जिले में केंद्रीय विद्यालय स्थापित किए जाएंगे। यदि केन्द्रीय विद्यालयों के साथ-साथ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों, सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सभी निजी विद्यालयों तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में दसवीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए तो निश्चित रूप से हमारे पास एक ऐसी पीढ़ी होगी जो अपनी-अपनी सेवा में आने के बाद अपना शत-प्रतिशत सरकारी काम हिन्दी में करने में सक्षम होगी। आज केन्द्रीय विद्यालयों में नौवीं कक्षा से हिन्दी एक वैकल्पिक विषय है। देश के लगभग सभी विद्यालयों में ऐसी ही स्थिति है। इसलिए समिति का सुझाव है कि केन्द्र सरकार द्वारा वित्तपोषित सभी विद्यालयों तथा सीबीएसई द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में दसवीं कक्षा तक हिन्दी पढ़ाई जानी चाहिए।

हिंदी भाषा का महत्व



541Online

हिंदी भाषा का अर्थ दुनिया में दूसरी सबसे ज़्यादा प्रचलित भाषा है, उसके बाद मंदारिन चीनी है। यह अनुमान लगाया जाता है कि एक अरब लोगों का एक बड़ा हिस्सा आम तौर पर इस अनूठी बोली में बात करता है। हिंदी का महत्व भारत की कई भाषाओं में से एक है जिसे आम लोगों और भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में देखा जाता है। भारतीय धुनों और उनके संशोधित संस्करणों का दुनिया भर में विभिन्न मानक रैप और प्रसिद्ध संगीत-कुशल श्रमिकों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। भारत में, संगीत संयुक्त राज्य अमेरिका में जाम के साथ-साथ दुनिया के बाकी हिस्सों में भी उत्कृष्ट हो जाता है। आधुनिक हिंदी इस प्रकार की भाषा है जो अपनी स्वायत्तता के बाद भारत में एक पूरी तरह से ठीक संरचना में विकसित हुई है और विभिन्न क्षेत्रों में इसका उपयोग किया जा रहा है।

जौनसार बावर क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि

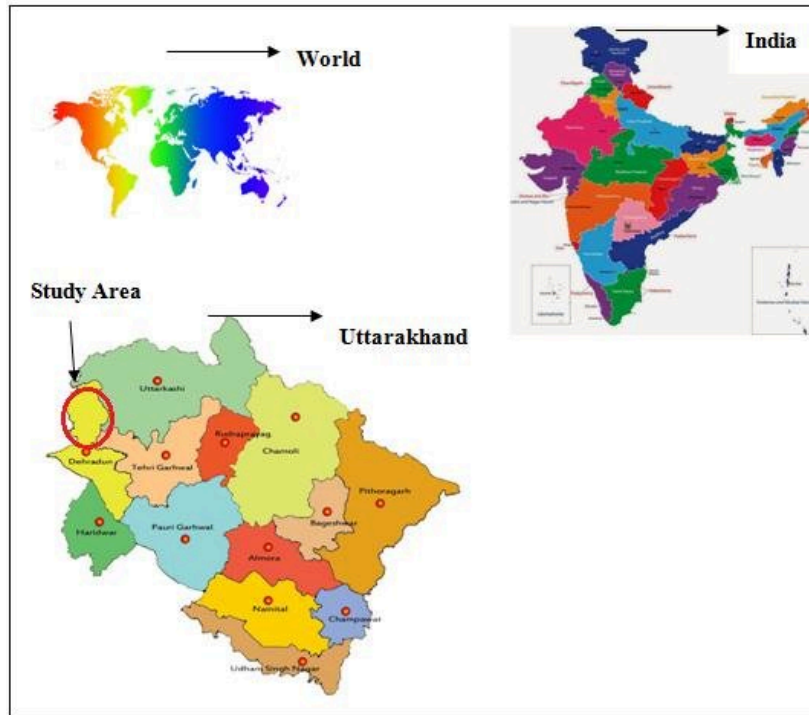
जौनसार-बावर देहरादून जिले का एक उप-विभाग है। यह जिले का पहाड़ी क्षेत्र है।



541Online

यह उत्तरी अक्षांश 30.31' और 31.3'30" तथा पूर्वी देशांतर 77.45' और 78.7' 20" के बीच स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 343.5 वर्ग मील है। इसकी सीमा पूर्व में यमुना नदी और पश्चिम में टोंस नदी से मिलती है, उत्तरी भाग उत्तरकाशी जिले और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों से सीमा साझा करता है और देहरादून तहसील इसकी दक्षिणी परिधि बनाती है। इस क्षेत्र में 1,500 मीटर से अधिक ऊँचाई वाली कई ऊँची चोटियाँ हैं। खरम्बा सबसे ऊँची चोटी है जिसकी ऊँचाई 3,084 मीटर है।

जौसर बावर के समुदाय को जौनसारी के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की बस्तियाँ 8 से लेकर बीस से अधिक परिवारों के छोटे-छोटे समुदायों से मिलकर बनी हैं, जो 1996 के सर्वेक्षण के अनुसार 88 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के घनत्व के साथ समूह रूप में फैले हुए हैं। 2001 की जनगणना में इस क्षेत्र की जनसंख्या 114593 थी, जिसमें से 59466 पुरुष और 55127 महिलाएँ थीं। अनुसूचित जाति की आबादी का अनुपात 29 प्रतिशत है। साक्षरता दर 13 से 39 प्रतिशत तक भिन्न होती है (पांडे, 2007)।



स्रोत: भुवन - एनआरएससी

इसरो का भारतीय भू मंच

अध्ययन की पृष्ठभूमि:

भारत एक बहुभाषी देश है और भारत के हर राज्य में भाषा की समस्या है। शोधकर्ता ने भारत सरकार द्वारा नियुक्त विभिन्न शिक्षा आयोगों की रिपोर्टों का हवाला दिया है और पाया है कि उन्होंने भाषाओं की समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया है। मुदालियर आयोग और कोठारी



5410online

आयोग दोनों ने त्रिभाषा सूत्र पर विचार किया है और इसे लागू करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों द्वारा उठाए जाने वाले कदमों का सुझाव दिया है। चूंकि भाषा नीतियों के कार्यान्वयन को मुदालियर आयोग द्वारा प्रतिपादित किया गया है और कोठारी गोरी आयोग द्वारा आगे समर्थन दिया गया है, इसलिए पिछले चालीस वर्षों में हमारे माध्यमिक विद्यालयों में भाषा शिक्षण की विभिन्न समस्याएं हुई हैं। भाषा शिक्षण की समस्याओं से निपटने के लिए कुछ शोध अध्ययन भी किए गए हैं। लेकिन भाषा विशेषज्ञ स्वयं इन अध्ययनों से बहुत संतुष्ट नहीं हैं।

भारत के एक प्रख्यात भाषाविद् डी.पी. पटनायक की टिप्पणी, जैसा कि नीचे उल्लेख किया गया है, इस बात को स्पष्ट करेगी। "भाषा शिक्षा के संबंध में राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर समय-समय पर परिवर्तन किए गए हैं, लेकिन शोध-आधारित निष्कर्षों की तुलना में अक्सर कार्रवाई सुविधा द्वारा निर्देशित की गई है। साथ ही यह भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि शैक्षिक शोध स्वयं भाषा शिक्षा से संबंधित समस्याओं और मुद्दों से निपटने में अनावश्यक रूप से ढीले और उदासीन रहे हैं।"



541Online

इस कमी के अलावा, डी.पी. पटनायक इन अध्ययनों की एक और महत्वपूर्ण सीमा की ओर भी इशारा करते हैं, इन शब्दों में: "भाषा शिक्षा में शोध की समीक्षा से पता चलता है कि भाषा शिक्षा में बड़ी संख्या में शोध स्कूल स्तर पर निर्धारित भाषा की पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम के विश्लेषण और मूल्यांकन से संबंधित हैं। कक्षाओं में भाषाओं को पढ़ाने से संबंधित बहुत कम अध्ययन हुए हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान में 94.70% माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी प्रथम भाषा के रूप में कार्य करती है। 100% माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में कार्य करती है जबकि लगभग 10% विद्यालयों में मराठी या कोंकणी तृतीय भाषा के रूप में कार्य करती है। शेष 20% विद्यालयों में फ्रेंच, उर्दू, पुर्तगाली आदि को तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। 5.30% माध्यमिक विद्यालयों में मराठी प्रथम भाषा के रूप में कार्य करती है। स्वाभाविक रूप से, हिंदी शिक्षण में कई समस्याएँ हैं जिनका सावधानीपूर्वक और व्यवस्थित रूप से समाधान किया जाना चाहिए। यदि



इन माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण प्रभावी होना चाहिए तो इस उद्देश्य के लिए वैज्ञानिक शोध कार्य करना आवश्यक है।

समस्या का विवरण:

भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में हिन्दी एक प्रमुख भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, लेकिन इसके शिक्षण और अधिगम की स्थिति में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। जौनसार बावर क्षेत्र, जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना के लिए जाना जाता है, वहाँ हिन्दी शिक्षण और अधिगम की स्थिति को लेकर कई समस्याएँ सामने आती हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय के शिक्षण और अधिगम की प्रभावशीलता में समाजशास्त्रीय कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जैसे कि सामाजिक वर्ग, जाति, भाषा, और क्षेत्रीय संस्कृति।

हिन्दी विषय के प्रति छात्रों का रुझान, शिक्षकों की भूमिका, संसाधनों की उपलब्धता, और विद्यालय प्रशासन की प्राथमिकताओं जैसे कारक भी हिन्दी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करते



541Online

हैं। जौनसार बावर क्षेत्र में हिन्दी को दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में देखा जाता है, जिससे इस क्षेत्र के छात्रों को इसके अधिगम में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह समझने में मदद करता है कि किस प्रकार सामाजिक संरचनाएँ, सांस्कृतिक विविधताएँ, और आर्थिक स्थिति हिन्दी शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, और शैक्षिक दृष्टिकोण से गहन विश्लेषण की आवश्यकता है, ताकि हिन्दी शिक्षण को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाया जा सके।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध समस्या के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

- 1- जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय की स्थिति का अध्ययन।
- 2- जौनसार क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय की शिक्षण व विधि सम्बन्धित संसाधनों का अध्ययन।
- 3- जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय के शिक्षण व



अधिगम की समस्याओं का अध्ययन।

4- जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय के शिक्षण व

अधिगम की समस्याओं का समाजशास्त्रीय विशलेषण ।

परिकल्पना बिंदु:

1. जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय की स्थिति संतोषजनक नहीं है।
2. हिन्दी शिक्षण के लिए जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण विधि और संसाधनों की कमी है।
3. इस क्षेत्र के विद्यालयों में हिन्दी विषय के शिक्षण में छात्रों और शिक्षकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
4. हिन्दी विषय के अधिगम में समाजशास्त्रीय कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।



5. जौनसार बावर क्षेत्र के विद्यालयों में हिन्दी विषय को उचित महत्त्व नहीं दिया जाता, जिससे इसकी शिक्षण स्थिति प्रभावित होती है।

मान्यताएँ:

1. जौनसार बावर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रति छात्रों की रुचि कम है।
2. इस क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण के लिए उपयुक्त संसाधनों की कमी है, जो शिक्षण प्रक्रिया को बाधित करती है।
3. हिन्दी शिक्षण में शिक्षकों की पर्याप्त प्रशिक्षण और अनुभव की कमी है।
4. समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक कारणों के चलते इस क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ अधिक गंभीर होती हैं।
5. विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रति शिक्षकों और प्रशासन का सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है, जिससे विषय की स्थिति कमजोर है।

हनोल स्थित महासू देवता



हनोल स्थित महासू देवता का मंदिर जौनसार बाबर की जनजाति संस्कृति का प्रतीक है। यह देवता यहां के लोगों का इष्ट देव है। कहा जाता है कि अपने वनवास और हिमालय यात्रा के दौरान पांडवों ने भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए इस मंदिर का निर्माण किया था। इस मंदिर में भिन्न चित्रों और मूर्तियों में प्राचीन पांडव शैली की झलक मिलती है। परंतु इस मंदिर के साथ एक और प्राचीन पौराणिक कथा भी जोड़ी गई है। जो बुद्धिजीवियों और पुरातत्व वेदों के लिए आज भी खोज का विषय बन चुका है। कहा जाता है कि पांडवों के वंश का एक व्यक्ति महेंद्रथ में रहता था और जहां एक अत्याचारी राक्षस का आतंक फैला हुआ था जो सबको बहुत परेशान करता था। हूँगाभाट भगवान शिव का उपासक था उसने कश्मीर जाकर उनकी उपासना की तब भगवान से प्रसन्न होकर दर्शन पाए। उसने घर जाकर पूर्ण विधि विधान से अनुष्ठान किया तो उसके खेत से भगवान शिव कर रूपों में प्रकट हुए जिन्हें चार महासू के नाम से जाना जाता है।



541Online





स्रोत : जौनसार बाबर का हनोल स्थित महाशिव देवता मंदिर

जौनसार बाबर के अधिकांश गांव में आज भी देवताओं के मंदिर विद्यमान है और इन्हें ब्रह्मा विष्णु महेश एवं शिव का रूप माना जाता है। इन्हीं देवताओं ने उसे दुष्ट राक्षस का वध किया और उसे व्यक्ति को सुखी रहने का मार्ग बताया। मान्यता यह है कि उसे पीढ़ी के सभी व्यक्ति जो उन भगवानों को पूर्ण रूप से स्वीकार कर चुके थे, उन पर सभी देवी देवताओं ने असीम शक्ति का प्रसार किया। देवता को असीम शक्ति का भंडार माना जाता है और कहा जाता है कि सच्चे दिल से उसे मंदिर जाने पर देव देवता भक्तों की सभी प्रार्थना अवश्य पूर्ण करते हैं। देवता आज भी मनुष्यों में अवतार के रूप में साक्षात् प्रकट होता है। यहां के सभी त्योहार देवता को समर्पित माने जाते हैं और यहां के लोकगीतों में आज भी देवता और उनकी महिमा का गुणगान किया जाता है। कुछ समय पूर्व ईसाइयों द्वारा देवता को यीशु भगवान कहा गया था लेकिन क्षेत्र के लोगों के भारी विरोध के कारण उनकी यह चाल सफल नहीं हुई।

जौनसार बाबर क्षेत्र का सांस्कृतिक और शैक्षिक परिदृश्य



541Online

जौनसार बावर उत्तराखंड के देहरादून जिले का एक विशेष जनजातीय क्षेत्र है, जो अपनी अनूठी सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक संरचना के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र के लोग अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, और भाषाओं में गहरी आस्था रखते हैं। जौनसार बावर की विशिष्ट जनजातीय पहचान और स्थानीय बोलियों का व्यापक प्रयोग इस क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों से अलग बनाता है, और यह सांस्कृतिक विविधता हिन्दी शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करती है।

यहाँ की सामाजिक संरचना में सामूहिकता, परंपरागत नियमों का पालन, और स्थानीय भाषा का विशेष महत्व है। यहाँ की स्थानीय भाषा, जिसे अक्सर 'जौनसारी' कहा जाता है, हिन्दी से काफी भिन्न होती है। यह भाषा न केवल दैनिक जीवन में बल्कि स्थानीय रीति-रिवाजों और धार्मिक आयोजनों में भी प्रमुखता से उपयोग होती है। हिन्दी, जो विद्यालयों में पढ़ाई जाती है, छात्रों के लिए एक नई और अजनबी भाषा होती है, क्योंकि उनका अधिकतर जीवन जौनसारी भाषा में ही व्यतीत होता है।



541Online

शोध डिज़ाइन

इस शोध का डिज़ाइन व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक है। शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया है। गुणात्मक विधि का उपयोग उन समस्याओं और मुद्दों को समझने के लिए किया गया है, जो हिन्दी शिक्षण में सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के कारण उत्पन्न होते हैं। वहीं, मात्रात्मक विधि का उपयोग विद्यार्थियों और शिक्षकों से प्राप्त डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए किया गया है।

सैम्पलिंग विधि

शोध में जौनसार बावर क्षेत्र के 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों और शिक्षकों को गैर-संभाव्यता सैम्पलिंग (Non-Probability Sampling) विधि के आधार पर चुना गया। प्रत्येक विद्यालय से औसतन 50 विद्यार्थी और 5 शिक्षक चुने गए, जिससे कुल 500 विद्यार्थी और 50 शिक्षक इस अध्ययन का



541Online

हिस्सा बने। सैम्पलिंग प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रखा गया कि चयनित नमूने क्षेत्र के विविध सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करें।

शोध के उपकरण

शोध में निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया:

प्रश्नावली: विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के लिए अलग-अलग प्रश्नावली तैयार की गई। विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली में अधिगम कठिनाइयों, शिक्षण सामग्री की उपलब्धता, और हिन्दी विषय के प्रति उनकी रुचि से संबंधित प्रश्न थे। शिक्षकों के लिए इसमें शिक्षण पद्धतियों, संसाधनों की कमी, और प्रशिक्षण की आवश्यकता से जुड़े प्रश्न थे।

साक्षात्कार: शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों से साक्षात्कार के दौरान उनकी व्यक्तिगत राय, शिक्षण के दौरान आने वाली समस्याएँ और समाधान के लिए उनके सुझाव पर चर्चा की गई।



541Online

क्षेत्रीय अध्ययन

जौनसार बावर क्षेत्र एक अद्वितीय सांस्कृतिक क्षेत्र है, जो शिक्षा के लिए भी विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है। क्षेत्रीय अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया कि यहाँ की भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ हिन्दी शिक्षण और अधिगम को कैसे प्रभावित करती हैं। विद्यालयों का दौरा कर वहाँ के शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों की शिक्षा पद्धतियों और छात्रों की समस्याओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

जौनसार बावर क्षेत्र उत्तराखंड का अवलोकन

जौनसारी उत्तराखंड का एक आदिवासी समूह है, जो देहरादून जिले के जौनसार-बावर क्षेत्र में निवास करता है। प्राचीन काल से इस समाज में बहुपति प्रथा विद्यमान है। बहुपति प्रथा दो शब्दों से मिलकर बनी है पॉली और एंड्रस; पॉली का अर्थ है कई और एंड्रस का अर्थ है पुरुष। इसलिए, बहुपति प्रथा यौन मिलन का एक रूप है, जिसमें एक महिला एक ही समय में दो या अधिक पतियों से विवाहित होती है और परिवार का अर्थ है एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। इसलिए, आर. पार्किंस कहते हैं कि, "परिवार बहुपत्नी या बहुपति हो सकते हैं, अर्थात्, एक से



541Online

अधिक जीवनसाथी और बच्चों के अनुरूप समूह वाले पुरुष या महिला होते हैं, हालांकि अक्सर प्रत्येक सह-व्यय अपने या अधिक बार अपने बच्चों के साथ एक अलग घर बना सकता है। यह बहुपति प्रथा जौनसारी में मौजूद है। यह जौनसारी द्वारा बसाए गए भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी उत्पत्ति महाभारत के पांडवों और राजस्थान के राजपूतों से हुई है। अतः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जौनसारी समाज को जानना है। अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक स्रोतों जैसे व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक दस्तावेजों आदि का उपयोग कर आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात उनके निष्कर्षों से पता चलता है कि वर्तमान समय में जौनसारी लोग अन्य लोगों से भिन्न हैं। स्थानीय परंपराओं में बहुविवाह और बहुपतित्व की उपस्थिति है, जिसमें बहुविवाह का प्रचलन अधिक है, जबकि वे एक पत्नी को साझा करना चुनते हैं, अर्थात् बहुपतित्व, हालांकि पति भाई होना चाहिए।

रांथी और ढांटी मुख्य शब्दावली है, लेकिन अब इसमें बदलाव आ गया है। महासू देवता मेला हनोल में। जौनसारी समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए शिक्षा एवं मीडिया



541Online

मुख्य कारक है। मनुष्य आवश्यकता, स्वभाव और आवश्यकता दोनों से ही एक सामाजिक प्राणी है, समाज के बिना। उसे अपने जीवन और अच्छे जीवन दोनों के लिए समाज की आवश्यकता होती है। मैकाइवर (1974) के अनुसार समाज अधिकार और पारस्परिक सहायता के उपयोगों और प्रक्रियाओं, मानव व्यवहार और स्वतंत्रता के नियंत्रण के कई समूहों और विभाजनों की एक प्रणाली है। यह निरंतर बदलती जटिल व्यवस्था, जिसे हम समाज कहते हैं, सामाजिक संबंधों का एक जाल है।” और जनजातीय समाज का अर्थ है - एक जनजाति के सामाजिक संगठन वाला समाज। जनजाति शब्द लैटिन शब्द 'ट्राइबस' से लिया गया है। पहले रोमन लोग इस शब्द का इस्तेमाल समाज में विभाजन को नामित करने के लिए करते थे। बाद के उपयोग से पता चलता है कि इसका मतलब गरीब लोग थे। भारत में 'जनजाति' का वर्तमान लोकप्रिय अर्थ लोगों की एक श्रेणी है, जो अनुसूचित जनजातियों की सूची में शामिल है।

उत्तराखंड, उत्तरांचल का दूसरा नाम है। भारतीय संविधान में सूचीबद्ध उत्तराखंड में पाँच अनुसूचित जनजातियाँ हैं। इस प्रकार हैं- जौनसार बावर, थारू, बोक्सा, भोटिया और राजी/बनारोट। जौनसार-बावर अपनी अलग संस्कृति और जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध है।



541Online

जौनसारी प्राचीन खासों से जुड़े हैं। मजूमदार के अनुसार, जौनसारी के बीच जाति व्यवस्था और बहुपतित्व प्रणाली का कम कठोर रूप इस समाज में मौजूद है। कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस जनजाति पर अध्ययन किया है जैसे- आर.एन. सक्सेना, डी.एन. मजूमदार, जी.एस. भट्ट आदि ने जौनसारी समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर अध्ययन किया है। जौनसारी का इतिहास- जौनसारी प्राचीन खसों से जुड़े हैं। महाभारत में भारत और पड़ोसी राज्यों के राजाओं द्वारा युधिष्ठिर को राज्याभिषेक समारोह में दिए गए विभिन्न उपहारों का विस्तृत विवरण दिया गया है। कहा जाता है कि खस और तांगन अन्य लोगों के साथ मिलकर सोने के ढेर लाए थे, जिन्हें चींटियों द्वारा धरती के नीचे से उठाया गया था और इसलिए उन्हें इन जीवों के नाम पर बुलाया गया था, खसों का उल्लेख कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में एकत्रित सेनाओं की महान सूची में नहीं है, लेकिन वे दुर्योधन की सेना में दिखाई देते हैं और तलवारों और भालों से लैस होकर सात्यकि के खिलाफ पत्थरों से लड़ते हैं। इन पहाड़ियों में पत्थरों से लड़ाई अच्छी तरह से जानी जाती थी।



डेटा का विश्लेषण

गुणात्मक डेटा विश्लेषण

गुणात्मक डेटा के विश्लेषण में वर्णात्मक और विषयवस्तु विश्लेषण तकनीकों का उपयोग किया गया है। साक्षात्कार और प्रत्यक्ष अवलोकन से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण किया गया, जिससे यह पता चला कि हिन्दी शिक्षण में आने वाली समस्याएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होती हैं।

उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों और शिक्षकों ने बताया कि हिन्दी को केवल एक 'पाठ्यक्रमीय विषय' के रूप में देखा जाता है, न कि भाषा के रूप में। क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता के कारण भी हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में देखा जाता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

मात्रात्मक डेटा विश्लेषण

मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर की मदद से किया गया। डेटा को विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके विश्लेषित किया गया, जिसमें औसत, प्रतिशत, मानक



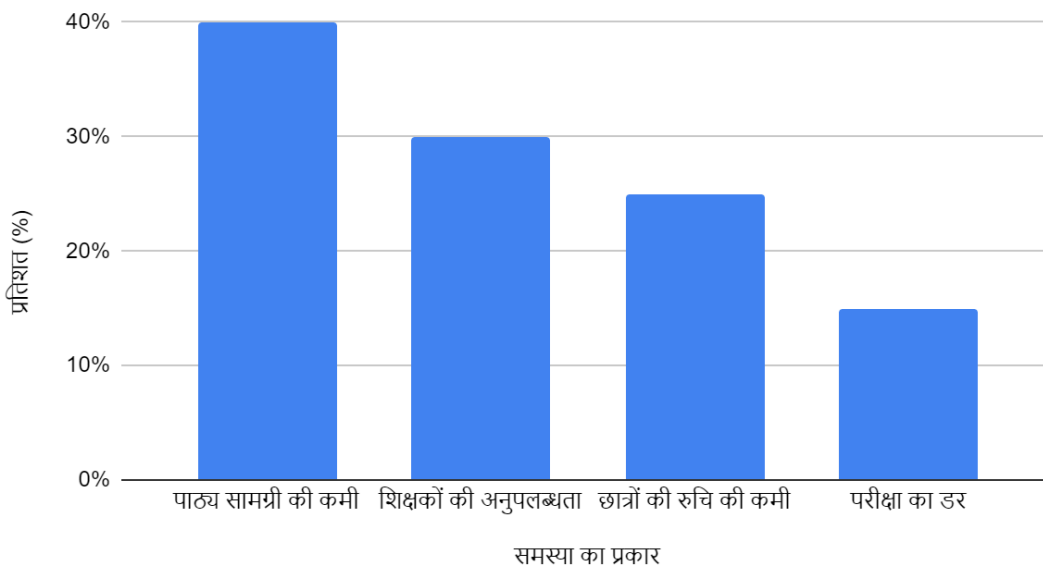
541Online

विचलन आदि का उपयोग किया गया। इससे हिन्दी शिक्षण की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिली। विभिन्न तालिकाएँ और ग्राफ बनाए गए, जो समस्या की गंभीरता और गहराई को स्पष्ट करते हैं।

तालिका 1: विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ

समस्या का प्रकार	प्रतिशत (%)	प्रमुख कारण	टिप्पणियाँ
पाठ्य सामग्री की कमी	40%	पुस्तकालय और डिजिटल सामग्री का अभाव	ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक प्रचलित है
शिक्षकों की अनुपलब्धता	30%	शिक्षकों की कमी	कई विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों की संख्या कम है
छात्रों की रुचि की कमी	25%	सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव	हिन्दी की उपयोगिता के प्रति रुचि का अभाव
परीक्षा का डर	15%	परीक्षा पद्धति की जटिलता	उचित मार्गदर्शन की कमी

प्रतिशत (%) vs. समस्या का प्रकार





541Online

सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव

जौनसार बावर की संस्कृति हिन्दी के शिक्षण और अधिगम पर व्यापक प्रभाव डालती है। इस क्षेत्र में कुछ जनजातियों की अपनी भाषाएँ और बोलियाँ हैं, जो हिन्दी के शिक्षण में बाधा उत्पन्न करती हैं। कई छात्र हिन्दी को अपनी दूसरी भाषा के रूप में देखते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। इस सांस्कृतिक विविधता के कारण हिन्दी शिक्षकों को अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव

सामाजिक और आर्थिक कारक भी हिन्दी शिक्षण को प्रभावित करते हैं। निम्न-आय वर्ग के छात्र अक्सर शैक्षणिक सामग्री और संसाधनों की कमी से जूझते हैं। इसके अलावा, अभिभावकों का शैक्षिक स्तर और आर्थिक स्थिति भी बच्चों के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

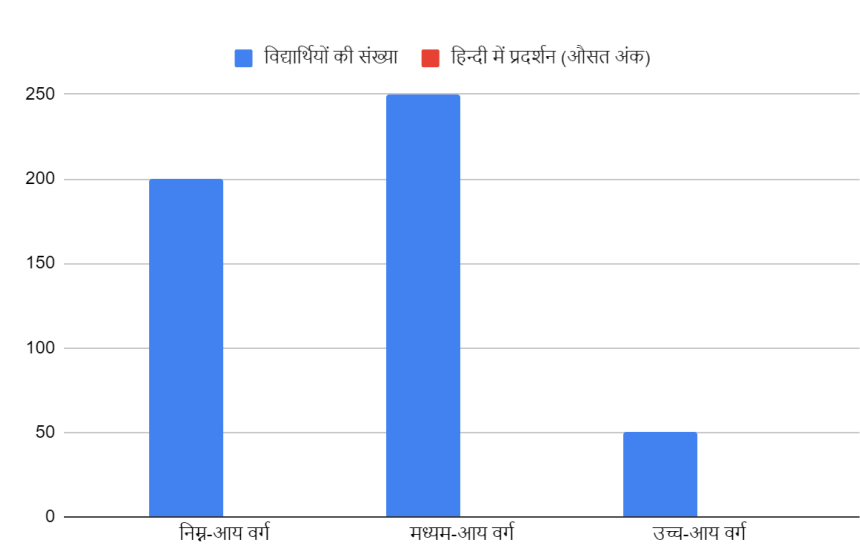
तालिका 2: सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यार्थियों का हिन्दी में

प्रदर्शन



541Online

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या	हिन्दी में प्रदर्शन (औसत अंक)	टिप्पणियाँ
निम्न-आय वर्ग	200	40%	संसाधनों की कमी और घरेलू जिम्मेदारियाँ
मध्यम-आय वर्ग	250	55%	कुछ हद तक संसाधनों की उपलब्धता
उच्च-आय वर्ग	50	70%	निजी ट्यूशन और बेहतर सुविधाएँ



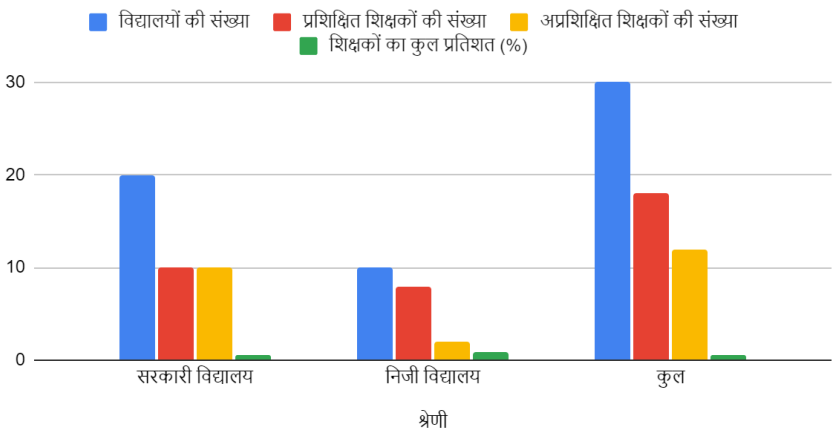
तालिका 3: जौनसार बावर क्षेत्र के विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों की संख्या और उनकी योग्यता



5410Online

श्रेणी	विद्यालयों की संख्या	प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	शिक्षकों का कुल प्रतिशत (%)
सरकारी विद्यालय	20	10	10	50%
निजी विद्यालय	10	8	2	80%
कुल	30	18	12	60%

विद्यालयों की संख्या, प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या, अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या and शिक्षकों का कुल प्रतिशत (%)



विश्लेषण:



541Online

उपरोक्त तालिका के अनुसार, जौनसार बावर क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है और अप्रशिक्षित शिक्षकों का प्रतिशत उच्च है। निजी विद्यालयों में शिक्षकों की योग्यता बेहतर है, जहां 80% शिक्षक प्रशिक्षित हैं।

निष्कर्ष:

यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों की योग्यता में सुधार की आवश्यकता है।

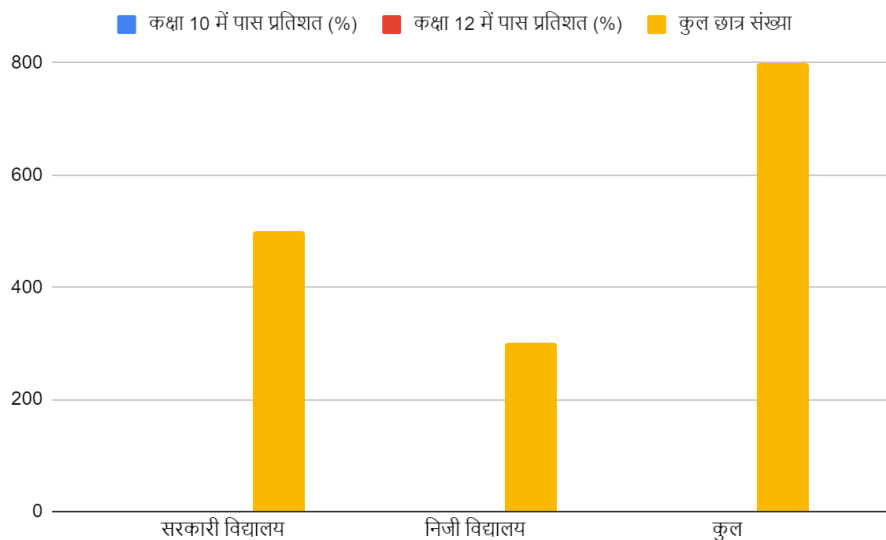
शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देकर हिन्दी शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है।

तालिका 4: हिन्दी विषय में छात्रों का प्रदर्शन (श्रेणी के अनुसार)

श्रेणी	कक्षा 10 में पास प्रतिशत (%)	कक्षा 12 में पास प्रतिशत (%)	कुल छात्र संख्या
सरकारी विद्यालय	60%	55%	500
निजी विद्यालय	85%	80%	300
कुल	72.5%	67.5%	800



541Online



विश्लेषण: इस तालिका के अनुसार, निजी विद्यालयों के छात्रों का हिन्दी विषय में प्रदर्शन सरकारी विद्यालयों की तुलना में बेहतर है। कक्षा 12 में पास प्रतिशत सरकारी विद्यालयों में और भी कम है, जो यह दर्शाता है कि उच्चतर कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ अधिक होती हैं।

निष्कर्ष:

हिन्दी शिक्षण की गुणवत्ता सुधारने के लिए सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों के प्रशिक्षण और संसाधनों की कमी पर ध्यान देना आवश्यक है। निजी विद्यालयों की शिक्षण पद्धतियों का विश्लेषण कर उसे सरकारी विद्यालयों में लागू किया जा सकता है।

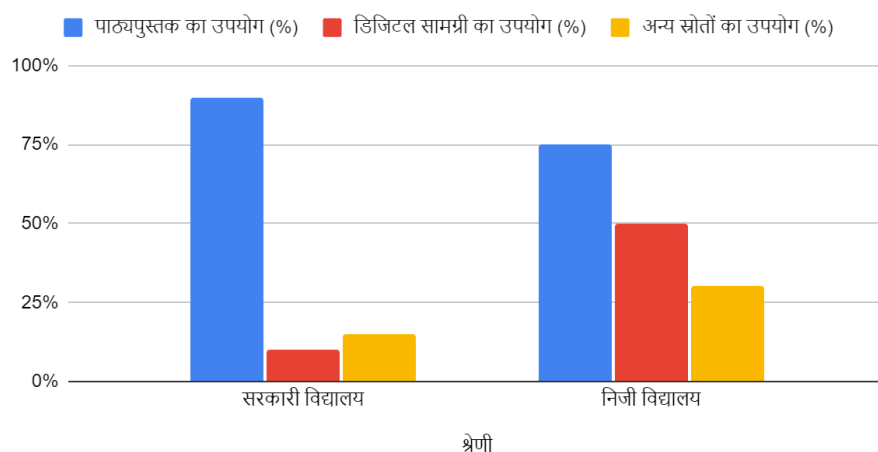


541Online

तालिका 5: हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री (स्रोत के आधार पर)

श्रेणी	पाठ्यपुस्तक का उपयोग (%)	डिजिटल सामग्री का उपयोग (%)	अन्य स्रोतों का उपयोग (%)
सरकारी विद्यालय	90%	10%	15%
निजी विद्यालय	75%	50%	30%

पाठ्यपुस्तक का उपयोग (%), डिजिटल सामग्री का उपयोग (%) and अन्य स्रोतों का उपयोग (%)



विश्लेषण:

तालिका से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों में अधिकतर शिक्षण पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है, जबकि निजी विद्यालयों में डिजिटल सामग्री और अन्य शिक्षण स्रोतों का भी उपयोग होता है।



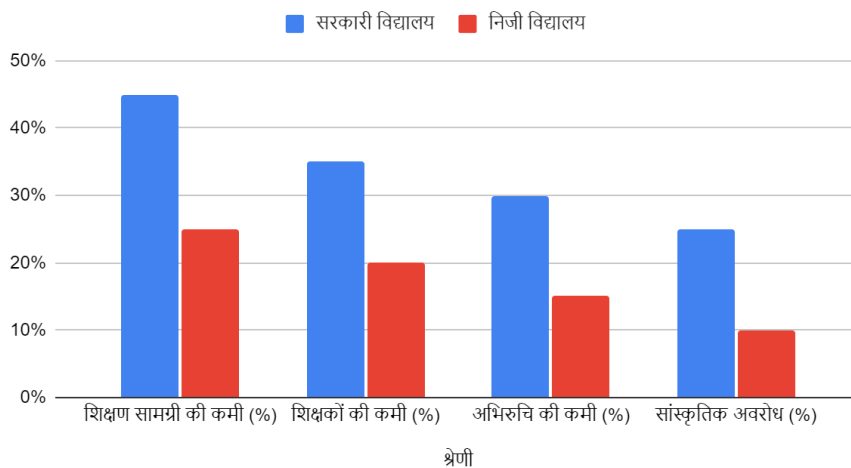
541Online

निष्कर्ष:

हिन्दी शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सरकारी विद्यालयों में डिजिटल सामग्री और अन्य वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। यह छात्रों की रुचि बढ़ाने और अधिगम को सरल बनाने में मदद करेगा।

तालिका 6: हिन्दी शिक्षण में अवरोध (छात्रों की प्रतिक्रिया)

श्रेणी	शिक्षण सामग्री की कमी (%)	शिक्षकों की कमी (%)	अभिरुचि की कमी (%)	सांस्कृतिक अवरोध (%)
सरकारी विद्यालय	45%	35%	30%	25%
निजी विद्यालय	25%	20%	15%	10%

सरकारी विद्यालय and निजी विद्यालय



541Online

विश्लेषण:

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों को शिक्षण सामग्री की कमी और शिक्षकों की अनुपलब्धता सबसे अधिक महसूस होती है। निजी विद्यालयों में इन समस्याओं का प्रतिशत कम है, जो यह दर्शाता है कि उनके पास संसाधनों की अधिक उपलब्धता है।

निष्कर्ष:

शिक्षण सामग्री और शिक्षकों की उपलब्धता सरकारी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की मुख्य चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए विशेष योजनाओं और कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

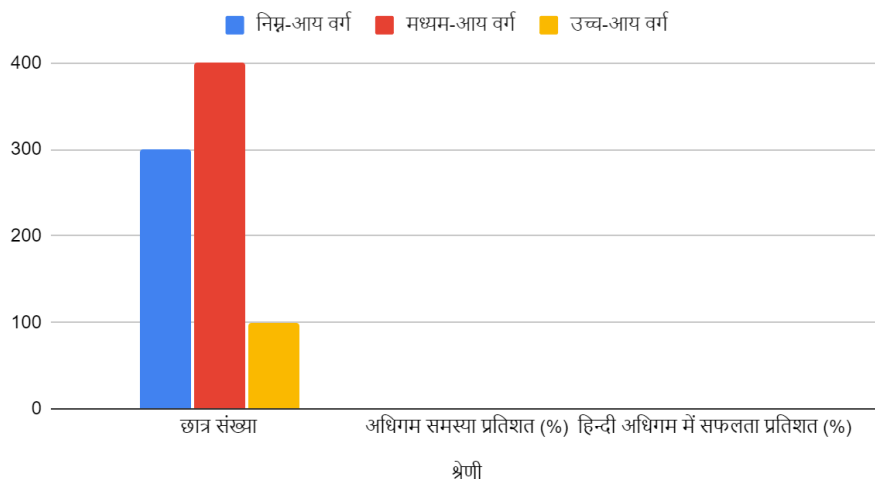
तालिका 7: हिन्दी अधिगम में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव

श्रेणी	निम्न-आय वर्ग	मध्यम-आय वर्ग	उच्च-आय वर्ग
छात्र संख्या	300	400	100
अधिगम समस्या प्रतिशत (%)	70%	40%	20%
हिन्दी अधिगम में सफलता प्रतिशत (%)	30%	60%	80%



541Online

निम्न-आय वर्ग, मध्यम-आय वर्ग and उच्च-आय वर्ग



विश्लेषण:

इस तालिका से स्पष्ट है कि निम्न-आय वर्ग के छात्रों को हिन्दी अधिगम में सबसे अधिक समस्याएँ होती हैं, जबकि उच्च-आय वर्ग के छात्रों का प्रदर्शन बेहतर है। मध्यम-आय वर्ग के छात्रों का प्रदर्शन औसत है, जो यह दर्शाता है कि आर्थिक स्थिति हिन्दी अधिगम पर गहरा प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष:



541Online

हिन्दी अधिगम में सामाजिक-आर्थिक स्थिति की भूमिका महत्वपूर्ण है। निम्न-आय वर्ग के छात्रों के लिए विशेष कार्यक्रम और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है ताकि वे भी हिन्दी विषय में सफलता प्राप्त कर सकें।

शोध के परिणाम

शोध में यह पाया गया कि जौनसार बावर क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण से संबंधित कई समस्याएँ हैं। इनमें सबसे प्रमुख समस्या शिक्षण संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता और छात्रों की हिन्दी के प्रति रुचि का अभाव है। इसके अलावा, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का भी हिन्दी के अधिगम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

हिन्दी शिक्षण में संसाधनों की भारी कमी है, विशेषकर ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में।

प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों की अनुपलब्धता भी एक बड़ी समस्या है।

छात्रों में हिन्दी के प्रति रुचि की कमी पाई गई, जो सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित है।



541Online

सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के हिन्दी अधिगम को प्रभावित करती है। निम्न-आय वर्ग के विद्यार्थियों को हिन्दी सीखने में अधिक समस्याएँ होती हैं।

शोध के सुझाव

शोध के परिणामों के आधार पर, जौनसार बावर क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण और अधिगम में सुधार लाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं:

शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता

शोध में यह स्पष्ट हुआ कि हिन्दी विषय के लिए शिक्षण संसाधनों की कमी एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए:

पुस्तकालय और डिजिटल संसाधन केंद्र: विद्यालयों में पुस्तकालय और डिजिटल संसाधन केंद्र स्थापित किए जाएँ, जहाँ हिन्दी की पुस्तकें, ई-बुक्स, और अन्य शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो। इन संसाधनों का प्रयोग छात्रों को भाषा सीखने में मदद कर सकता है।



541Online

ऑडियो-विज़ुअल शिक्षण सामग्री: आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए ऑडियो-विज़ुअल शिक्षण सामग्री तैयार की जाए, जो छात्रों की रुचि बढ़ाने में मददगार हो। हिन्दी विषय के लिए शिक्षण वीडियो, एनिमेशन, और पॉडकास्ट विकसित किए जा सकते हैं, जिससे छात्रों की समझ और सीखने की प्रक्रिया सरल और रोचक बन सके।

शिक्षकों का प्रशिक्षण और विकास

शोध में यह पाया गया कि हिन्दी शिक्षण में योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जाते हैं:

नियमित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम: हिन्दी शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे वे शिक्षण के नए तरीकों और पद्धतियों को सीख सकें। इस प्रशिक्षण में नवीनतम तकनीकों, भाषा शिक्षण की विधियों, और सांस्कृतिक विविधता को समायोजित करने के तरीकों को शामिल किया जाना चाहिए।

प्रेरणा और प्रेरक साधन: शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार और मान्यता कार्यक्रम शुरू किए जाएँ, ताकि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में निष्ठा से कार्य कर सकें।



सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों का समायोजन

जौनसार बावर क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता हिन्दी शिक्षण के लिए एक चुनौती है। इस समस्या का समाधान निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है:

दो-भाषीय शिक्षण: विद्यार्थियों की स्थानीय भाषा और हिन्दी दोनों का संयोजन करते हुए शिक्षण पद्धति को विकसित किया जाए। इस प्रकार से हिन्दी को उनकी स्थानीय भाषा के साथ जोड़कर पढ़ाने से उन्हें आसानी से समझ आने लगेगी।

सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम: अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों को हिन्दी भाषा की महत्ता और शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष अभियान चलाए जाएँ। इससे समाज में हिन्दी शिक्षा को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा।

पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में सुधार

शोध में यह पाया गया कि वर्तमान पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति हिन्दी विषय में रुचि बढ़ाने में असफल हो रही है। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:



541Online

व्यावहारिक शिक्षण: हिन्दी को केवल एक विषय के रूप में न पढ़ाकर इसे व्यावहारिक और संवादात्मक शिक्षण पद्धति के रूप में अपनाया जाए। कक्षा में नाटक, कविता पाठ, चर्चा सत्र, और समूह गतिविधियों को शामिल किया जाए, जिससे हिन्दी में संवाद की क्षमता विकसित हो सके।

छात्र-केन्द्रित शिक्षण: शिक्षण पद्धति को अधिक छात्र-केन्द्रित बनाया जाए, जिसमें विद्यार्थियों की भागीदारी और रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण गतिविधियों का आयोजन हो। इसका उद्देश्य छात्रों की समझ और अभिव्यक्ति को विकसित करना होगा।

निष्कर्ष

इस शोध के निष्कर्षस्वरूप यह स्पष्ट हुआ कि जौनसार बावर क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया कई सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित है। हिन्दी शिक्षण में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता, और छात्रों की हिन्दी के प्रति रुचि की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसके अलावा, क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी हिन्दी अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



541Online

शोध के परिणाम यह बताते हैं कि हिन्दी शिक्षा को सुधारने के लिए न केवल शैक्षिक संस्थानों बल्कि समुदाय, अभिभावकों, और स्थानीय संगठनों की भागीदारी आवश्यक है। शिक्षण पद्धतियों में सुधार, संसाधनों की उपलब्धता, और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देकर हिन्दी शिक्षा के स्तर में सुधार लाया जा सकता है।

अंततः, इस शोध ने जौनसार बावर क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण और अधिगम की समस्याओं के गहन समाजशास्त्रीय विश्लेषण द्वारा यह बताया है कि शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त संरचनात्मक और सांस्कृतिक मुद्दों को हल किए बिना, हिन्दी शिक्षण की चुनौतियों का समाधान संभव नहीं है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. गौंडर, पी., और प्रसाद, पी. फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी में हिंदी भाषा के छात्रों की संख्या में गिरावट के निर्धारक(2017). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च -ग्रंथालय, 5(8), 267-276.
2. सौरभ, के., और मनसोत्रा, वी. हिंदी भाषा सूचना पुनर्प्राप्ति पर अंग्रेजी के प्रभाव का एक प्रायोगिक विश्लेषण (2012). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन, 41(11), 30-35.



541Online

3. अग्रवाल, निधि (2019). नवीन सूचना संचार प्रौद्योगिकी के गुणवत्ता उपाय। कॉसमॉस जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 9(1): 5-8.

4. अग्रवाल, निधि, और मंडल, टी., (2019). शिक्षक विशेषज्ञता और स्कूलरूम प्रक्रियाओं पर एक अध्ययन। ग्लोबस जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजुकेशन, 9(1); 7-9, doi:10.5281/zenodo.3760855.

5. रोइस्तिका, एन. बहुभाषी देशों में भाषा नीति और नियोजन. (2019). भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में एक मामला। एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स पर ग्यारहवें सम्मेलन की कार्यवाही (CONAPLIN 2018).

6. गौंडर, पी.आर. (2016). फिजी संदर्भ में संस्कृति, विरासत और पहचान को परिभाषित करना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड कल्चरल स्टडीज (IJHCS), ISSN 2356-5926, 2(1), 239-249.

7. अग्रवाल, निधि और जायसवाल, सुषमा, स्कूल में शिक्षक की संगठनात्मक प्रतिबद्धता पर एक अध्ययन. (2019). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, 4(1); 39-41, DOI 10.5281/zenodo.3806468

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5



541Online

Vol. 1, Issue: 8, October 2024